SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

राजतंत्र से गणतंत्र की ओर नेपाल की राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन एवं जन आंदोलनों का अध्ययन

मिथिलेश कुमार, शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग
शैक्षणिक परिसर, भूपेंद्र नारायण मण्डल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

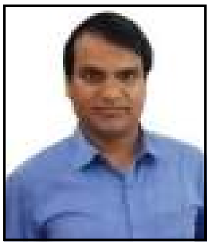

Author
मिथिलेश कुमार, शोधार्थी
E-mail : mithileshkumar2525@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 31/04/2025
Revised on : 31/05/2025
Accepted on : 10/06/2025
Overall Similarity : 00% on 02/06/2025

शोध सार

तिब्बती पठार और उपमहाद्वीप के मैदाने –जो कि आधुनिक समय के चीन और भारत के मध्य स्थित नेपाल लंबे समय से व्यापारियों, यात्रियों और तीर्थयात्रियों के लिए एक विश्राम स्थल के रूप में अपने स्थान से समृद्ध हुआ है। एक सांस्कृतिक मिश्रण का स्थल, यह संस्कृतियों को जोड़ता है और अपने पड़ोसियों के तत्वों को अवशोषित कर लिया है, फिर भी नेपाल एक अद्वितीय चरित्र को बनाए रखा। हालांकि विश्व में आध्यात्मिक केन्द्र तथा प्राकृतिक सुन्दरता से परिपूर्ण भूमि के रूप में विख्यात, नेपाल अपनी तरह के एक अंतर्निहित राजनीतिक संघर्ष से ग्रस्त रहा है। नेपाल लंबे समय से अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक "राजतंत्रीय हिंदू राज्य" के रूप में अपनी पहचान बनाए रखी, लेकिन वर्ष 2006 में घटी घटनाओं ने देश और नेपाल की इस प्रतिष्ठा को पूरी तरह से बदल दिया। यह एक धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक, गणतांत्रिक राज्य में तब्दील हो गया। इस तरह के बड़े बदलाव रातों रात नहीं होते हैं बल्कि विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और आर्थिक कारक होते हैं। ऐसे कारकों की खोज और जांच वर्तमान अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य है। इस प्रकार, एक राजनीतिक प्रणाली का विश्लेषण उसके सबसे महत्वपूर्ण और प्रारंभिक काल में करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द

राजतंत्र, गणतंत्र, नेपाल, राजनीति, जन आंदोलन.

राजनीतिक रूपरेखा

नेपाल की भौगोलिक स्थिति और संक्षिप्त राजनीतिक इतिहास का वर्णन करना आवश्यक है। नेपाल हिमालयी देशों में सबसे बड़ा देश है, और दक्षिण एशियाई क्षेत्र का एक स्थल–रुद्ध राज्य है। दो एशियाई दिग्गजों – भारत

और चीन के बीच स्थित नेपाल, दोनों देशों के बीच बफर राज्य के रूप में कार्य करता है। एक स्थल–रुद्ध राज्य होने के कारण, यह समुद्र तक पारगमन पहुँच के लिए दूसरों पर निर्भर है। नेपाल की विशेषता एक असमान स्थलाकृति है और इसका आकार मोटे तौर पर समलम्बाकार है। नेपाल तीन पूर्व–पश्चिम भौगोलिक क्षेत्रों पर्वतीय क्षेत्र, पहाड़ी क्षेत्र और तराई क्षेत्र में विभाजित है। नेपाल अपने मैदानों, चौड़ी घाटियों और ऊंचे पहाड़ों की स्थलाकृति की तरह ही जातीय रूप से भी विविधतापूर्ण है। नेपाल के भौतिक विभाजन इसके सुचिह्नित नस्लीय और धार्मिक क्षेत्रों की व्यापक रूपरेखा के अनुरूप हैं। नेपाली आबादी में मंगोल और भारतीय दोनों तरह की मिश्रित नस्ल शामिल हैं। नेपाल में आज भी स्वदेशी समुदायों के अवशेष मौजूद हैं। नेपाल में बोली जाने वाली सभी भाषाएँ राष्ट्रीय भाषाएँ हैं। नेपाली नेपाल की आधिकारिक भाषा है, जिसे लगभग 60 प्रतिशत आबादी बोलती है। हालाँकि, नेपाल में बोली जाने वाली सभी भाषाओं का उपयोग आधिकारिक उद्देश्यों और दस्तावेजीकरण के लिए किया जा सकता है। नेपाली धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। नेपाल का उल्लेख महाभारत, पुराणों, जैन और बौद्ध धर्मग्रंथों जैसे प्राचीन भारतीय ग्रंथों में भी वर्णित है। कौटिल्य के चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के अर्थशास्त्र में भी नेपाल का उल्लेख मिलता है। यह बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध का जन्मस्थान माना जाता है। 12 वीं शताब्दी से 14 वीं शताब्दी के अंत तक नेपाल विभिन्न भारतीय राजवंशों के नियंत्रण में था। 14 वीं शताब्दी में नेपाल 78 छोटी–छोटी रियासतों में बंटा हुआ था। देश के एकीकरण का कार्य राजा पृथ्वी नारायण शाह ने पूरा किया। नारायण शाह को 1765 ई. में 'आधुनिक नेपाल के जनक' के रूप में सम्मानित किया गया। उनके वंशजों ने राज्य को मजबूत करने का काम आगे बढ़ाया। 1800 के बाद, और विशेष रूप से नेपाल की हार के बाद 1814–16 के युद्ध में अंग्रेजों द्वारा गोरखाली, पृथ्वी के उत्तराधिकारी नारायण शाह नेपाल पर दृढ़ राजनीतिक नियंत्रण बनाए रखने में असमर्थ साबित हुए। जंग बहादुर तक आंतरिक उथल–पुथल जारी रही राणा, कुंवर कुलीन वर्ग के वंशज, 1846 के कोट नरसंहार के बाद उनकी स्थिति मजबूत हो गई।

जनांदोलन

1990 के पूर्व जन आंदोलनों एवं नेपाली राजनीतिक प्रणाली के विकास पर चर्चा निम्न प्रकार हैं:

1. संवैधानिक राजतंत्र (1768 से 1774)
2. घटती राजशाही (1775–1846)
3. बंदी राजतंत्र (1846–1991)
4. विद्रोही राजतंत्र (1950–51)
5. राजतंत्र द्वारा लोकतंत्र को बढ़ावा (1951–1955)
6. प्रतिस्पर्धी राजतंत्र (1955–1960)
7. मुखर राजतंत्र (1960–1990)
8. संवैधानिक राजतंत्र (1990–2001)
9. घटती राजशाही (2001–2008)

19वीं सदी के अंत में देश में राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जागरूकता की लहर उभरी। भारत की स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आंदोलन ने शिक्षित नेपाली युवाओं के मन पर बहुत प्रभाव डाला। इस उद्देश्य से नेपाली युवाओं ने इसमें भाग लिया कि भारत पर ब्रिटिश शासन का अंत नेपाल में राणा कुलीनतंत्र को समाप्त कर देगा। नेपाली कांग्रेस के नेतृत्व में 1947 में अंग्रेजों के भारत से बाहर निकलते ही राणा शासन के खिलाफ आंदोलन शुरू हो गया था। आंदोलनकारी लोगों को शांत करने के लिए राणाओं ने नेपाल का पहला लिखित संविधान पेश किया जिसे 'नेपाल सरकार अधिनियम, 2004 वीएस (1948 ई.)' कहा जाता है। इस संविधान ने सतही तौर पर राणा प्रणाली को बदल दिया। इसने द्विसदनीय विधायी निकाय की स्थापना की। एक सदन की पूरी सदस्यता और दूसरे के बहुमत का चयन प्रधानमंत्री द्वारा किया जाता था, जो विधायिका द्वारा पारित किसी भी उपाय को अस्वीकार कर

सकता था। कम से कम पाँच सदस्यों का एक मंत्रिमंडल था, जिनमें से कम से कम दो को विधायिका के कुछ निर्वाचित सदस्यों में से चुना जाता था। अधिनियम में यह भी निर्दिष्ट किया गया है कि पंचायत गांवों, कस्बों और जिलों में स्थानीय स्वशासन की व्यवस्था शुरू की जाएगी। इसमें कुछ मौलिक अधिकार और कर्तव्य बताए गए हैं, जिनमें भाषण, प्रेस, सभा और पूजा की स्वतंत्रता कानून के समक्ष समानता सभी के लिए मुफ्त प्राथमिक शिक्षा और समान और सार्वभौमिक मताधिकार शामिल हैं। इस सुधार के बावजूद, संविधान द्वारा राणा प्रणाली में किए गए परिवर्तन मामूली थे। अधिक रूढ़िवादी राणाओं ने माना कि संविधान को खतरनाक मिसाल बताते हुए पद्मा को जबरन हटाने का निर्णय लिया गया शमशेर को इस्तीफा देना पड़ा, एवं संविधान की घोषणा स्थगित कर दी गई। संविधान प्रभावी हो गया।

सितम्बर 1950 में कुछ 'बी' और 'सी' श्रेणी के राणा जिन्हें प्रधानमंत्री के सिंहासन के उत्तराधिकार को अयोग्य घोषित किया गया। 1948 के संविधान द्वारा मंत्रिपरिषद् ने राणा विरोधी ताकतों से हाथ मिला लिया, जिसमें बाद में राजा भी शामिल हो गए। 6 नवंबर 1950 को राजा त्रिभुवन अपने तीन बेटों, उनकी पत्नियों और बेटों तथा दो रानियों के साथ शिकार अभियान के बहाने महल से निकल गए और भारतीय दूतावास में शरण ली। चार दिन बाद उन्हें उनके परिवार के साथ विशेष विमान से नई दिल्ली ले जाया गया। नेपाली कांग्रेस ने राणातंत्र के खिलाफ देशव्यापी मुक्ति संघर्ष शुरू कर दिया। इस बीच तत्कालीन राणा प्रधानमंत्री शमशेर ने राजा त्रिभुवन के पोते ज्ञानेंद्र को नेपाल की गद्दी पर बिठाया। उन्होंने नये राजा के पक्ष में ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत से मान्यता मांगी, जिसे तीनों देशों ने अस्वीकार कर दिया। काठमांडू के लोगों ने तीव्र प्रदर्शन शुरू कर दिए, जिन्हें दबाने में राणा पुलिस विफल रही। अंत में, महाराजा मोहन शमशेर ने भारतीय प्रधानमंत्री पंडित नेहरू द्वारा दिए गए सुझावों को स्वीकार कर लिया और राजा त्रिभुवन को नेपाल के वास्तविक और संवैधानिक सम्राट के रूप में मान्यता दी। उन्होंने चौदह सदस्यों की एक अंतरिम सरकार बनाने और 1952 तक संविधान सभा के गठन के लिए चुनाव कराने पर भी सहमति व्यक्त की, जिसमें आधे लोकप्रिय प्रतिनिधि होंगे। राजनीतिक दलों को भी कानूनी मंजूरी दी गई। इसे दिल्ली समझौते के रूप में जाना जाता है, जिस पर 12 फरवरी, 1951 को दिल्ली में तीन दलों – राजा, राणा और नेपाली कांग्रेस के बीच हस्ताक्षर किए गए थे।

राजा त्रिभुवन 15 फरवरी, 1951 को नेपाल लौटे और 18 फरवरी को एक ऐतिहासिक घोषणा जारी की, जिसमें नेपाल की नई राजनीतिक व्यवस्था की शुरुआत की गई, जिसे नेपाल का अंतरिम संविधान, 1951 के नाम से जाना जाता है। इस दिन नेपाल पर राणा परिवार के एक सदी से भी अधिक के निरंकुश शासन का अंत हुआ। अंतरिम संविधान की शुरुआत 1951 में हुई थी। संविधान ने प्रधानमंत्री के अधिकार और व्यवस्था के अंत की पुष्टि की। इसमें राजा को सर्वोच्च कार्यकारी, विधायी, और न्यायिक शक्तियाँ दी गयी। राजा अपने कार्यकारी अधिकार का प्रयोग कर सकता था, और एक मंत्रिपरिषद द्वारा सहायता प्राप्त और सलाह प्राप्त की जा सकती थी। संविधान ने एक सर्वोच्च न्यायालय की भी स्थापना की, तथा राजा को सर्वोच्च बनाया। सशस्त्र बलों के कमांडर ने मौलिक अधिकारों पर जोर दिया और विस्तार किया। राणा को संविधान में शामिल किया गया, और कई सामाजिक और आर्थिक घोषणाएँ की गईं।

सरकार के उद्देश्य जनता के कल्याण को बढ़ावा देना था तथा लोगों को एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था प्रदान करना था जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय हो सके तथा राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं में व्याप्त हो सके।

राणा और नेपाली कांग्रेस के प्रतिनिधियों के साथ पहली लोकतांत्रिक सरकार का गठन हुआ लेकिन यह सरकार गिर गई क्योंकि इसमें विषम तत्व शामिल थे और केवल नेपाली कांग्रेस के मंत्रियों वाली एक नई कैबिनेट बनाई गई। यह सरकार भी रक्षा समझौते एवं दल विद्रोह के कारण गिर गई। राजनीतिक अस्थिरता के कारण 1952 में राजा द्वारा प्रत्यक्ष शासन की व्यवस्था की आवश्यकता पड़ी लेकिन फिर से राजा को 1953 में एक नई लोकतांत्रिक सरकार नियुक्त करने के लिए मजबूर होना पड़ा। यह अवधि बहुत अधिक राजनीतिक अस्थिरता के साथ चिह्नित थी क्योंकि एक भी लोकतांत्रिक सरकार एक या डेढ़ साल से अधिक नहीं चली। इस बीच, मार्च 1955 में स्विटजरलैंड

में राजा त्रिभुवन की मृत्यु हो गई, एवं उनकी मृत्यु नेपाल में लोकतंत्र के लिए एक बड़ा झटका था। नए राजा राजा महेंद्र को लोकतांत्रिक व्यवस्था पसंद नहीं थी। वह राजनीतिक दलों के कटु आलोचक थे और उनके खिलाफ सामंतवादी तत्वों का समर्थन करते थे। उनके अधीन नेपाली लोकतंत्र को एक झटका लगा, परंतु यह व्यवस्था किसी तरह चालू रहा फिर से उनके शासनकाल 1959 में संविधान बना एवं लागू किया गया।

इस नए संविधान के लिए, यह कहा जा सकता है कि यह सबसे अच्छा राजनीतिक रियायत और एक संप्रभु सम्राट द्वारा अपने लोगों को दिया गया था। इसमें निर्वाचित निकाय और निर्वाचित प्रमुख को शक्तियों के सावधानीपूर्वक हस्तांतरण का प्रावधान किया गयां। दोनों को सम्राट की नजर और नाक के नीचे काम करना था, जिसे किसी भी दिन अपने विवेक से पूरी व्यवस्था को खत्म करने का अधिकार था एवं राजा ने दिसंबर 1960 में लोकतांत्रिक प्रयोग को खत्म किया, इस बहाने से कि लोकतांत्रिक सरकार ने सत्ता का दुरुपयोग किया है और भ्रष्ट आचरण को बढ़ावा दिया है। दो साल बाद राजा महेंद्र ने एक नई शासन प्रणाली शुरू की जो इंडोनेशिया के निर्देशित लोकतंत्र और पाकिस्तान के लोकतंत्र से प्रेरित थी। इस नई प्रणाली को 1962 के पंचायत संविधान के रूप में जाना जाता है। इस नए संविधान का उद्देश्य राजा को संप्रभुता का स्रोत बनाकर राजत्व की संस्था को अत्यंत मजबूत और शक्तिशाली बनाना था। इस संविधान का सबसे उल्लेखनीय नवाचार रहित चार स्तरीय पंचायत प्रणाली और आंशिक रूप से स्वतंत्र न्यायिक प्रणाली और आंशिक रूप से शाही नियंत्रण के अधीन था।

राजा महेंद्र की मृत्यु 1972 में हुई और उनके बेटे बीरेंद्र ने उनकी जगह ली, जिन्हें एक प्रगतिशील और आधुनिक व्यक्ति के रूप में देखा जाता था और राजनीतिक दलों ने सुधारों की उम्मीदें उन पर टिकाई थीं। हालाँकि, राजा बीरेंद्र व्यवस्था को बदलने के मूड में नहीं थे, फिर भी उन्होंने कुछ सुधार पेश किए। ये सुधार व्यवस्था के खिलाफ असंतोष को रोकने में विफल रहे, जो वर्ष 1990 में एक जन आंदोलन के रूप में सामने आया। इसकी शुरुआत तब हुई जब 18 फरवरी 1990 को नेपाली छात्रों के पंचायत प्रणाली के पक्ष में निकाले गए एक जुलूस का एक अन्य जुलूस से भिड़ंत हो गई। पुलिस ने गोलीबारी की और अनिर्दिष्ट संख्या में लोगों को मार डाला एवं घायल कर दिया । विद्रोह की आग धीरे–धीरे पूरे देश में फैल गई और राजा ने अंततः 8 अप्रैल 1990 को राजनीतिक नेताओं से मुलाकात करके और बाद में पार्टी विहीन शब्द को हटाने एवं राजनीतिक दलों पर प्रतिबंध हटाने की घोषणा करके लोगों की मांगों के आगे घुटने टेक दिए।

दो जन आंदोलनों के बीच का कालखंड उन घटनाओं का वर्णन करता है जो 1990 के जन आंदोलन के बाद घटित हुईं और अंततः 2006 के दूसरे जन आंदोलन का कारण बनीं। 1990 के आंदोलन के बाद, नेपाली कांग्रेस, संयुक्त वाम मोर्चा, महल के नामांकित और निर्दलीय सदस्यों से मिलकर एक अंतरिम सरकार बनाई गई। इस सरकार ने 9 नवंबर 1990 को नेपाल साम्राज्य के लिए एक नया संविधान तैयार किया और उसे लागू किया, जिसने पुरानी पंचायत प्रणाली को पूरी तरह से खत्म कर दिया और एक संवैधानिक राजतंत्र की व्यवस्था की। इस संविधान को महल और कांग्रेस के बीच एक समझौता माना जा सकता है, जबकि वाम मोर्चे को थोड़ा हाशिए पर रखा गया है फिर भी, नेपाल के पहले के संविधानों की तुलना में, इस प्रणाली ने देश में एक लोकतांत्रिक, संवैधानिक व्यवस्था के विकास में एक बड़ी प्रगति को चिह्नित किया।

इसके बाद मई 1991 में नेपाल में आम चुनाव हुए, नेपाली कांग्रेस बहुमत वाली पार्टी बनकर उभरी और जीपी कोइराला के नेतृत्व में सरकार बनाई लेकिन पार्टी में अंदरूनी कलह के कारण एनसी सरकार गिर गई परिणामस्वरूप वर्ष 1994 में मध्यावधि चुनाव हुए, जिसमें सीपीएन (यूएमएल) सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी (लेकिन साधारण बहुमत से पीछे रह गई), उसके बाद नेपाली कांग्रेस का स्थान रहा। राजा बीरेंद्र ने मनमोहन अधिकारी को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। यह अधिकारी सरकार भी गिर गई और उसकी जगह शेर सिंह के नेतृत्व वाली एनसी सरकार बनी। बहादुर देउबा सरकार भी अल्पकालिक रही और 1996 में लोकेंद्र सिंह के नेतृत्व में सीपीएन, यूएमएल और आरपीपी की नई गठबंधन सरकार ने उसकी जगह ले ली। यह सरकार छह महीने तक चली और उसके बाद 1999 में नए चुनाव होने तक दो और अल्पकालिक गठबंधन सरकारें बनीं। नेपाली कांग्रेस फिर से बहुमत वाली पार्टी

के रूप में उभरी और कृष्ण प्रसाद भट्टाराई ने प्रधानमंत्री पद संभाला। हालांकि, आंतरिक गुटबाजी के कारण भट्टाराई को पद छोड़ना पड़ा और उनकी जगह जीपी कोइराला को नियुक्त किया गया। हालांकि, नेपाल में राजशाही को जून 2001 में सबसे बड़ा झटका लगा, जब क्राउन प्रिंस दीपेंद्र ने अपने माता–पिता राजा बीरेंद्र तथा रानी ऐश्वर्या एवं परिवार के अन्य सदस्यों की हत्या कर दी और फिर खुद को भी मार डाला। नतीजतन, नेपाल की गद्दी अब स्वर्गीय राजा बीरेंद्र के छोटे भाई ज्ञानेंद्र के पास चली गई।

2006 का जन आंदोलन

यह आंदोलन 1996 में रोल्पा, रुकुम, जाजरकोट, सल्यान, गोरखा और सिंधुली के छह दूरदराज के जिलों में एक छोटे से सशस्त्र संघर्ष के रूप में शुरू हुआ था। इस विद्रोह को अंजाम देने वाली पार्टी सीपीएन (एम) थी। इस पार्टी ने राजशाही संस्था के पूर्ण उन्मूलन की मांग के साथ 1990 के आंदोलन में भी भाग लिया था। जब राजा ने 1990 में लोकप्रिय दबाव के आगे घुटने टेक दिए, तो वाम मोर्चा विभाजित हो गया, एक गुट ने एनसी और पैलेस के साथ हाथ मिला लिया, और दूसरे गुट ने संघर्ष जारी रखा। इस गुट की पार्टियाँ, सीपीएन (मशाल), सीपीएन (चौथी कांग्रेस) और सरभरा श्रमिक संगठन का विलय होकर सीपीएन–एम बना। शुरू में इस आंदोलन को कानून एवं व्यवस्था का मामला माना गया और सरकार ने उग्रवाद को रोकने के लिए नेपाल पुलिस को बल प्रयोग का निर्देश दिया। बल प्रयोग में क्रूरता और मानवाधिकारों के उल्लंघन के लिए नेपाली पुलिस की भी आलोचना की गई। सरकार ने बातचीत और सैन्य कार्रवाई की दोतरफा रणनीति अपनाकर माओवादी समस्या से निपटने की कोशिश की। हालांकि राजा ज्ञानेंद्र के सत्ता में आने के बाद हालात काफी बदल गए। 1 फरवरी 2005 को, अपेक्षाकृत लोकतांत्रिक सरकार की शांति और व्यवस्था बहाल करने में असमर्थता के जवाब में, राजा ज्ञानेंद्र ने आपातकाल लगा दिया और सरकार का पूरा नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया, मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया और राजनीतिक दलों, छात्र संगठनों और अन्य समूहों पर कार्रवाई की। राजा की इस कार्रवाई से राजनीतिक दल और माओवादी विद्रोही करीब आ गए बाद में नवंबर 2005 में एसपीए और माओवादियों के बीच 12 सूत्री समझौता हुआ और राजा ज्ञानेंद्र के निरंकुश शासन को समाप्त करने के लिए उन्होंने हाथ मिला लिया।

6 अप्रैल, 2006 को सात पार्टी गठबंधन ने एक राष्ट्रव्यापी आम हड़ताल और असहयोग आंदोलन शुरू किया। राजा ज्ञानेंद्र ने इस जन आंदोलन को रोकने के लिए कठोर कदम उठाए लेकिन अंततः 24 अप्रैल, 2006 को बढ़ते जन प्रतिरोध ने संकटग्रस्त राजा को अपने घुटनों पर ला दिया, और वह एसपीए को सत्ता सौंपने के लिए सहमत हो गए। पुरानी संसद को फिर से बहाल किया गया और जीपी कोइराला प्रधानमंत्री बने। 16 जून, 2006 को कोइराला और माओवादी सुप्रीमो प्रचंड ने ऐतिहासिक 8 सूत्री समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के अनुसार, माओवादियों ने हथियार छोड़ दिए और मुख्यधारा की राजनीति में शामिल हो गए। नई संविधान सभा के गठन और राजशाही की संस्था को खत्म करने की उनकी लंबे समय से चली आ रही मांग को स्वीकार कर लिया गया। इस समझौते ने नेपाल में एक दशक से चल रहे सशस्त्र संघर्ष का अंत कर दिया।

लोकतांत्रिक प्रणाली का वर्तमान कार्य

एसपीए और माओवादियों के बीच हस्ताक्षरित व्यापक शांति समझौते के अनुसार, 15 जनवरी, 2007 को एक अंतरिम संविधान लागू किया गया। इस संविधान ने नेपाल के पिछले संविधानों में एक बड़ा बदलाव किया, जिसमें देश की संप्रभु सत्ता राजा के बजाय लोगों के हाथों में निहित की गई। इसने नेपाली लोगों को कई अधिकार और स्वतंत्रताएँ भी प्रदान कीं। अंतरिम संविधान ने दो साल की अवधि के भीतर नेपाल के लिए लोकतांत्रिक तरीके से एक नया संविधान तैयार करने के लिए एक लोकप्रिय रूप से निर्वाचित संविधान सभा के गठन को अनिवार्य किया। इसने राजशाही को भी समाप्त कर दिया और नेपाल को एक गणतंत्र राज्य घोषित कर दिया। तदनुसार, नेपाल की पहली संविधान सभा के लिए 10 अप्रैल 2008 को चुनाव हुए। सीपीएन–एम, चुनावों में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी, लेकिन बहुमत से चूक गई। अंततः माओवादियों ने जुलाई 2008 में पुष्प कमल दहल के प्रधानमंत्रीत्व में सरकार बना ली। कमल दहल 'प्रचंड', सीपीएन (यूएमएल), एमपीआरटी और 18 अन्य सीमांत दलों के समर्थन से डॉ. राम

बरन यादव और परमानन्द झा को पहले संविधान सभा द्वारा क्रमशः राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के पदों के लिए चुना गया।

हालांकि, नेपाल में किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत न मिलने से राजनीतिक खींचतान और अस्थिरता का एक और दौर शुरू हो गया। सेना प्रमुख जनरल रूकमंगुड की बर्खास्तगी के मुद्दे पर एक साल बाद प्रचंड की सरकार गिर गई। कटवाल के नेतृत्व में राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की शक्तियों के बीच टकराव हुआ। उनके बाद सीपीएन (यूएमएल) के माधव कुमार नेपाल ने सत्ता संभाली, जिन्होंने 22 दलों की गठबंधन सरकार का नेतृत्व किया। माओवादियों ने अब राष्ट्रपति और सरकार के खिलाफ सड़कों पर विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। इसने शांति प्रक्रिया और संविधान—मसौदा प्रक्रिया को पटरी से उतार दिया इसलिए प्रधानमंत्री नेपाल ने 28 मई 2010 को अन्य राजनीतिक दलों के साथ एक समझौता किया। समझौते के अनुसार, सीए का कार्यकाल एक साल के लिए बढ़ा दिया गया और नेपाल ने नई सरकार के गठन के लिए रास्ता बनाने के लिए इस्तीफा दे दिया। लेकिन इस नई सरकार का गठन एक कठिन कार्य साबित हुआ क्योंकि शांति प्रक्रिया में कुछ लंबित मुद्दों पर राजनीतिक दलों के बीच कोई आपसी सहमति नहीं थी, जिनमें प्रमुख था माओवादी गुरिल्लाओं का नेपाल सेना में विलय। राजनीतिक गतिरोध की स्थिति अंततः 3 फरवरी 2011 को समाप्त हुई, जब सीपीएन (यूएमएल) के झालानाथ खनल को माओवादी सुप्रीमो के साथ हुए समझौते के परिणामस्वरूप नया प्रधानमंत्री चुना गया। प्रचंड ने खनल सरकार को सत्ता से बाहर कर दिया लेकिन खनल सरकार सी.ए. का कार्यकाल फिर से बढ़ाने के अलावा कुछ खास हासिल नहीं कर पाई। 28—29 मई 2011 की मध्यरात्रि को राजनीतिक दलों ने एक और समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते ने सी.ए. का कार्यकाल तीन महीने के लिए बढ़ा दिया और खनल को पद छोड़ने का आदेश दिया, ताकि एक नई राष्ट्रीय एकता सरकार बनाई जा सके। खनल के बाद डॉ. बाबूराम ने पदभार संभाला। भट्टराय के नेतृत्व में अगस्त 2011 में सीपीएन (एम) की सरकार बनी। उनकी सरकार की प्रमुख उपलब्धियाँ संविधान सभा को तीन महीने के लिए और आगे बढ़ाना (यानी 30 नवंबर 2011 तक) और माओवादी लड़ाकों का एकीकरण और पुनर्वास करना थीं लेकिन संविधान का मसौदा तैयार करने की प्रक्रिया तय समय से काफी पीछे रह गई और जब पार्टियाँ संविधान सभा के दूसरे विस्तार पर विचार कर रही थीं तब नेपाल के सर्वोच्च न्यायालय ने घोषणा की कि यह अंतिम विस्तार होगा और अगर नई समय सीमा (यानी 28 मई 2012) तक संविधान का मसौदा तैयार नहीं किया गया तो संविधान सभा के लिए नए चुनाव कराने का आदेश दिया। जैसी कि उम्मीद थी, नई समय सीमा भी बिना किसी देरी के बीत गई और 27 मई 2012 की मध्य रात्रि को सी.ए. को भंग कर दिया गया, लेकिन संविधान सभा के लिए नए चुनाव कराने से फिर मतभेद पैदा हो गए और अंत में राजनीतिक दलों ने नेपाल के मुख्य न्यायाधीश खिल राज रेगमी के नेतृत्व में एक नई राष्ट्रीय आम सहमति वाली सरकार बनाने का फैसला किया। रेगमी ने 14 मार्च 2013 को प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली और अगले ही दिन रेगमी सरकार की सहायता के लिए चार प्रमुख दलों का एक उच्च स्तरीय राजनीतिक तंत्र बनाया गया। उन्हें 21 जून 2013 तक चुनाव कराने का काम सौंपा गया था। हालांकि राजनीतिक असहमति की स्थिति के कारण चुनाव 19 नवंबर 2013 तक स्थगित कर दिए गए। जब अंततः उक्त तिथि को चुनाव हुए तो हिंसा की एक बड़ी घटना को छोड़कर वे कुल मिलाकर शांतिपूर्ण रहे। जब परिणाम घोषित हुए तो नेपाली कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी, लेकिन फिर से बहुमत से पीछे रह गई। अंततः नेपाली कांग्रेस ने सरकार बनाने के लिए सीपीएन—यूएमएल के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए 10 फरवरी 2013 को नेकां के कोइराला नये प्रधानमंत्री बने। वे नेकां, सीपीएन —यूएमएल और कुछ अन्य गौण दलों की गठबंधन सरकार का नेतृत्व कर रहे हैं और अब उन्हें नेपाल के लिए समय पर नया संविधान तैयार करने का कार्य सौंपा गया है।

निष्कर्ष

नेपाली राजनीति के परिवर्तन में बाधा उत्पन्न करने वाली कुछ चुनौतियों और समस्याओं को गिनाया गया है, जैसे, राजनीतिक नेताओं के क्षुद्र स्वार्थ और प्रलोभन, धन और बाहुबल की अवांछित और असंवैधानिक भूमिकाय संविधानवाद के प्रस्ताव का संस्थागतकरण न होना, आदि। कुछ सुझाव और उपचारात्मक उपाय भी दिए गए हैं जैसे लोकतंत्र का अधिक सहभागी मॉडल अपनाया जाना चाहिए, न्यायिक सक्रियता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, नेताओं

की राजनीतिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता है, कानून और व्यवस्था को लागू करने के लिए प्रभावी तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए, आदि।

संदर्भ सूची

1. Britannica (2019) नेपाल – संघीय गणराज्य, Encyclopædia Britannica, https://www.britannica.com/place/Nepal/Federalrepublic, Assessed on 20/03/2025.
2. Zuberi, M.; & Karan, P.P. (2019) नेपालः संस्कृति, इतिहास और लोग, Encyclopædia Britannica, https://www.britannica.com/place/Nepal, Assessed on 20/03/2025.
3. Balaji, D.M.S. (2017) नेपाल में 20 वर्षों में पहले स्थानीय स्तर के चुनाव आयोजित, विवेकानंद इंटरनेशनल फाउंडेशन. https://www.vifindia.org/article/2017/kzuly/31/nepal-holds-first-local-level-elections-in-20-years, Assessed on 22/03/2025.
4. नेपाल विदेश मंत्रालय (2016) नेपाल में पर्यटन, https://mofa.gov.np/about-nepal/tourism-in-nepal/
5. Sharma, G. (2021) नेपाल की सर्वोच्च अदालत ने संसद को बहाल एवं नए प्रधानमंत्री की नियुक्ति का आदेश, https://www.reuters.com/world/asia-pacific/nepals-supreme-court-reinstates-parliament-orders-new-pm-be-appointed-2021-07-12/, Assessed on 21/03/2025.
6. Bhatta, C. D. (2022) नेपाल चुनावः मधेश में राजनीति का पुनर्गठन, Outlook India, https://www.outlookindia.com/international/nepal-election-2022-remaking-of-politics-in-madhes-news-239077, Assessed on 21/03/2025.
7. Osmani, S. R. (2022) नेपाल का संक्षिप्त राजनीतिक और आर्थिक इतिहास, Ulster University, https://pure.ulster.ac.ukf/iles/11744362/Nepal.doc, Assessed on 23/03/2025.
8. Shah, S. (1981) एक अर्थव्यवस्था का विकास – नेपाल का अनुभव, Asian Survey, 21, 1060–1079.
9. Pandey, R. (2021) नेपाल द्वारा सामना की गई राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियाँ और इसका भारत–नेपाल संबंधों पर प्रभाव, India Foundation, https://indiafoundationin/articles-and-commentaries/political-and-economic-challenges-faced-by-nepal-and-its-impact-on-indo-nepal-relations/, Assessed on 22/03/2025.
10. Consing, A. Y. (1963) नेपाल की अर्थव्यवस्था, IMF Stffa Papers, https://www.elibrary.imforg/view/kzournals/024/1963/003/article-A005-en-xml, Assessed on 21/03/2025.
11. United Nations Human Rights (2016) नेपाल संघर्ष रिपोर्ट, OHCHR, https://www.ohchr.org/en/documents/country-reports/nepal-conflict-report, Assessed on 23/03/2025.
12. Tiwari, R. K. (2013) नेपाल का सशस्त्र संघर्ष और शांति प्रक्रिया, *त्रिभुवन विश्वविद्यालय पत्रिका,* 28, 217–224.
13. Upadhyay, P. (2008) नेपाल में दुविधाः एक संघर्ष परिप्रेक्ष्य, *Himalayan Journal of Sociology and Anthropology,* 3, 73–85.

****